ओम शान्ति 23-06-15 मधुबन

मम्मा स्मृति दिवस निमित्त सर्व ब्राह्मण परिवार प्रति दादी जानकी जी के उद्गार

ओम शान्ति, ओम शान्ति, ओम शान्ति। मैं कौन मेरा कौन और यह सारा ईश्वरीय परिवार, जो दिल से कहते हैं मम्मा और बाबा। कल है मम्मा का दिन, जनवरी होता है बाबा का। वण्डरफुल हमारे ब्राह्मण लाइफ में मम्मा बाबा की पालना-पढ़ाई ऐसी अच्छी तरह से हमारे रग-रग में डाल दी है जिससे भविष्य सतयुग में आने का फिक्स हो गया है। पर बाबा के साथ जाना है। यह पूर्वज सभी मम्मा बाबा की पालना लेकर दूसरा जनम लेकर सेवा कर रहे हैं। यह बाबा जाने बाबा के बच्चे जाने। अभी मेरे को तो यही है, जैसी मेरी माँ, जैसा मेरा बाप ऐसे मुझे बनना है। निर्मोही, निष्कामी, अनासक्त वृत्ति से न्यारे और प्यारे। हरेक आत्मा का पार्ट न्यारा है। दो का भी एक जैसा नहीं हो सकता है। कभी भी यह ख्याल नहीं आता है कि यह कौन है, कैसा है, क्या करता है। कभी भी टोन से आवाज नहीं निकलता है। कई कहते हैं देखती हो यह कैसे बोलता है, नहीं मैं देखती नहीं हूँ, सुनती नहीं हूँ। यह आर्गन्स, आंखे कान, मुख ऐसा हो गया है जैसे बाबा को देखती हूँ ना। कर्मातीत, पहले विकर्माजीत, फिर है कर्मातीत, फिर है अव्यक्त स्थिति। अभी जो माँ-बाप को सामने रखते हैं उनको ऐसी स्थिति बनाने के बिगर और कोई बात सूझती नहीं है।

बाबा के डायरेक्सन अनुसार मैं दिल्ली में 19 को गई थी कल 22 को वापस आ गई। वण्डरफुल बाबा कल वहां आज यहां बिठा देता है। कल मीठी मम्मा का दिन है, इमेल में मीठी मम्मा की बातें गई है। सदा ही मम्मा ने बाबा को सामने रखकरके हमारी पालना की है। यह नहीं समझा मैं करती हूँ मैंने कभी मम्मा के मुख से मैं नहीं सुना। मेरा बाबा है, सो भी मुख से नहीं दिखाया, प्रैक्टिकली सदैव सूपत बच्चा देखना हो तो मम्मा को देखो। और यज्ञ सेवा, मन्सा वाचा कर्मणा जो मम्मा के द्वारा देखी वो साधारण नहीं थी परन्तु साधारण होते हुए भी श्रेष्ठ आत्मा, श्रेष्ठ आत्मा बनना हो तो मम्मा को सामने रखो। भूं-भूं करके औरों को आप समान बनाने में निर्संकल्प, देवता। देवताओं को कोई संकल्प नहीं चलेगा। हम सब देवता बनने वाले हैं। देवता तो फ्यूचर में बनेंगे, अभी फरिश्ता बनना है। धरती पर पांव न हो, जहाँ कदम वहाँ कमाई का समय है न। एक जगह पर पांव न हो, मैं तो इस कमरे से दूसरे कमरे में भी जाती हूं तो समझती हूँ इसमें भी कमाई है। पढ़ाई के बाद कमाई होती है, हमारी ऐसी वण्डरफुल पढ़ाई हो जो पढ़ाई में ही कमाई दिखाई पड़ती है। कमाई करने का समय यह संगमयुग है, बाबा का बनकरके प्यूरिटी पीस, हैपीनेस क्या होती है वो सेवा करता रहे। ओम शान्ति।

मेरी तीन बारी की ओम शानित समझ गये हो ना, कर्म पर बहुत ध्यान देना है। पास्ट के जनमों के विकर्म विनाश हो जायें, इस जनम में कोई भूल हुई तो बाबा ने क्षमा दे दी, ज्ञान का सागर बाबा है तो क्षमा का सागर भी है। अभी बाबा के ऐसे संग रहूं जो सच्ची दिल पर साहेब राजी क्या करे काजी, ऐसा प्रैक्टिकल लाइफ हो जो कभी भी धर्मराज आंख न दिखावे। ऐसे अटेन्शन रखने से टेंन्शन फ्री हो जाते हैं। अनासक्त वृत्ति से, तपस्वी मूर्त से सेवा करना हमारा संगमयुग में भाग्य है, पद्मापदम भाग्य है। सेवा में हाँ जी, बड़ा मीठे शब्दों में बात करनी है, शब्द ऐसे मुख से निकले जो कभी भूले नहीं। ओके थैंक्यू, ओम शान्ति।